

गणि. गुणित वि. (तत्.) 9. हरण किया गया, निकाल लिया गया।

आहति स्त्री. (तत्.) 1. चोट 2. मार डालना 3. गणि. गुणन।

आहन पुं. (फा.) लोहा।

आहनन पुं. (तत्.) 1. यष्टि, डंडा 2. मारना, पीटना।

आहननीय वि. (तत्.) 1. डंका बजा कर प्रसिद्ध करने वाला 2. मारने योग्य।

आहनी वि. (फा.) 1. लोहे का 2. लोहे जैसा कठोर।

आहर पुं. (तत्.) 1. लाना 2. ग्रहण करना, पकड़ना 3. साँस लेना 4. साँस से खींची गई हवा 5. समय, काल 6. दिन 7. युद्ध, लड़ाई।

आहरण पुं. (तत्.) 1. प्रशा. सरकार की ओर से खजाने या बैंक से धनराशि निकालने का कार्य, छीनना, हर लेना 2. स्थानांतरित करना 4. ग्रहण करना, लेना 5. यज्ञादि पूरा करना 6. विवाह के समय वधू को उपहार में दिया जाने वाला धन।

आहरण अधिकारी पुं. (तत्.) प्रशा. सरकार की ओर से बैंक खजाने आदि से धन निकलवाने एवं उसके (आवश्यकतानुसार) व्यय आदि के लिए प्राधिकृत अधिकारी! drawing officer

आहरण पर्ची स्त्री. (तत्.) वाणि. बैंक से स्वयं अथवा वाहक के माध्यम से रुपया निकलवाने का प्रपत्र। टि. आहरण पर्ची के साथ खातेदार के लिए अपनी पासबुक प्रस्तुत करना जरूरी होता है, जबकि चेक साथ हो। withdrawal form

आहर्ता वि. (तत्.) 1. हरण करनेवाला, छीननेवाला 2. आहरण करने वाला 3. अनुष्ठान करनेवाला 4. प्रवृत्त करने वाला 5. प्राप्त करने वाला।

आहला पुं. (देश.) नदियों की बाढ़, जल का विप्लव।

आहव पुं. (तत्.) 1. युद्ध 2. ललकार, आह्वान 3. यज्ञ।

आहवन पुं. (तत्.) यज्ञ, हवि, होम करना।

आहवनी स्त्री. (तत्.) कर्मकांड में प्रयुक्त तीन प्रकार की अग्नियों में से तीसरी, यह गार्हपत्य अग्नि से निकालकर अभिमंत्रित करके यज्ञ के लिए मंडप में पूर्व की ओर स्थापित की जाती है वि. आहुति देने योग्य।

आहवनीय वि. (तत्.) यज्ञ करने योग्य, होम करने योग्य।

आहौ स्त्री. (देश.) 1. आह्वान, बुलावा 2. अव्य. (देश.) इंकार, अस्वीकृति, हाँ नहीं 3. अव्य. (देश.) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ

आहा अव्य. (तत्.) आश्चर्य और हर्ष सूचक अव्यय।

आहार पुं. (तत्.) 1. भोजन, खाना 2. खाने की वस्तु 3. स्वीकार कर लेना।

आहारक पुं. (तत्.) 1. पास लाने वाला 2. जैन एक प्रकार की उपलब्धि जिसके द्वारा चतुर्दशपूर्वाधारी मुनिराज अपनी शंका के समाधान के लिए हस्तमात्र शरीर धारण कर तीर्थंकरों के पास उपस्थित होते हैं।

आहारतंत्र पुं. (तत्.) दे. पाचन तंत्र।

आहार नाल स्त्री. (तत्.) आयु. मुख से मलद्वार तक विस्तारित नलिकाओं का क्रम जो भोजन के पाचन, अवशोषण तथा मलोत्सर्ग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसके प्रमुख अंग हैं- मुख, गुहा, ग्रसनी, ग्रासनली, आमाशय आंतें तथा मलाशय दे. पाचन तंत्र।

आहार विज्ञान पुं. (तत्.) आयु. वह शास्त्र जिसमें भोजन के पोषकतत्वों के गुणधर्म एवं उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया जाता है।

आहार-विहार पुं. (तत्.) खाना-पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार मनोरंजन प्रयो. प्रत्येक व्यक्ति को अपना आहार-विहार ठीक रखना चाहिए।

आहारिक पुं. (तत्.) 1. जैन आत्मा के पाँच शरीरों में से एक 2. आहार संबंधी।

आहारिणी स्त्री. (तत्.) खानेवाली, आहार करने वाली।